S. S. Jain Subodh P.G. College (Autonomous)
Jaipur

SYLLABUS

THREE YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME IN ARTS (B.A.)

Subject/Discipline: Hindi Literature (हिन्दी साहित्य)

I & II SEMESTER EXAMINATION 2023-24

III & IV SEMESTER EXAMINATION 2024-25

V & VI SEMESTER EXAMINATION 2025-26

As per NEP-2020

S. S. Jain Subodh P.G. College (Autonomous)
Jaipur

FACULTY OF ARTS

Programme Name: THREE YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME IN ARTS

Subject/Discipline: Hindi Literature (हिन्दी साहित्य)

(Syllabus as per NEP-2020 and Choice Based Credit System)

Medium of Instruction: Hindi

w.e.f. Academic Session 2023-24

Curriculam Framework of B.A. – Hindi

(i)	Title of the Course	बी ए
(ii)	Level of the Course	स्नातक
(iii)	Credit of the Course	36 क्रेडिट
(iv)	Delivery sub-type of the course	व्याख्यान, चॉक एण्ड टॉक मेथॅड, पीपीटी
(v)	Pre-requisite of the course	पूर्वापेक्षा – एक भाषा के रूप में हिन्दी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह भारतीय जीवन–मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिन्दी विश्व की सबसे प्रमुख वैज्ञानिक भाषा है।
(vi)	Objectives of the course	उद्देश्य :– 1. वैश्वीकरण के युग में शिक्षा–जगत के समक्ष आ रही चुनौतियों का समाधान करने के उद्देश्य से। 2. विद्यार्थियों की अभिरूचि, उनकी ग्राह्य क्षमता एवं रोजगारोन्मुखी – लचीली – शिक्षण – व्यवस्था निर्मित करने हेतु। 3. विद्यार्थियों के भाषायी विकास और उसे समुन्नत बनाने हेतु। 4. विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को बढ़ाना। 5. विद्यार्थियों में साहित्यिक और अन्य मौलिक रचनाओं के प्रति उनकी समझ व रूचि विकसित करने के उद्देश्य से। 6. साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी भारतीय संस्कृति और परम्परा का ज्ञान कराना। 7. साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में अच्छे–बुरे की पहचान की क्षमता विकसित करना तथा जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा देना। 8. हिन्दी भाषा को शुद्ध बोलने तथा शुद्ध लिखने का ज्ञान देना। 9. हिन्दी भाषा में स्पष्ट रूप से अपने भाव और अनुभूतियों एवं विचारों को व्यक्त करना सिखाना।
(vii)	Syllabus	संपूर्ण पाठ्यक्रम (संलग्न)
(viii)	Scheme of Examination	परीक्षा प्रणाली / मूल्यांकन प्रणाली (संलग्न)
(ix)	Suggested books and reference including links to e-resources, and	संदर्भ ग्रंथ सूची (संलग्न)
(x)	Learning Outcome of the course	अधिगम प्रतिफल :– हिन्दी साहित्य का अध्ययन–अध्यापन वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है करीब 90 करोड़ लोग हिन्दी भाषा बोलते–समझते हैं। हिन्दी भाषा एवं साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। हिन्दी ने तकनीक की भाषा के रूप में स्वयं को ढाल लिया है। हिन्दी में विविध क्षेत्रों में रोजगार की बहुत अधिक सम्भावनाएँ हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में दक्षता हेतु। विद्यार्थियों में रचना कौशल का विकास करने के लिए।

कला में स्नातक

विषय : हिन्दी साहित्य

परीक्षा योजना एवं विस्तृत पाठ्यक्रम संरचना सत्र : 2023–24

स्नातक प्रथम सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	11110	हिन्दी काव्य–प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य – I	DSC-I	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2	11111	हिन्दी कहानी	DSC-2	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

स्नातक द्वितीय सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	11210	हिन्दी काव्य–प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य – II	DSC-I	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	11211	हिन्दी उपन्यास	DSC-2	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

स्नातक तृतीय सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	11311	प्रयोजनपरक हिन्दी – I	DSC-I	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	11312	हिन्दी निबंध	DSC-2	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

स्नातक चतुर्थ सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	11410	प्रयोजनपरक हिन्दी – II	DSC-I	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	11411	हिन्दी नाटक	DSC-2	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

स्नातक पंचम सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	11511	हिन्दी काव्य -- आधुनिक हिन्दी काव्य – I	DSE-I	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	11512	हिन्दी भाषा व्याकरण और साहित्य सिद्धान्त – I	DSE-2	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
3.		व्यावसायिक सम्प्रेषण हेतु हिन्दी कौशल	DSE-3	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
उपर्युक्त में से किन्हीं दो का चयन करें।						

स्नातक षष्ठ सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	11610	हिन्दी काव्य – आधुनिक हिन्दी काव्य – II	DSE-I	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	11611	हिन्दी भाषा व्याकरण और साहित्य सिद्धान्त – II	DSE-2	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
3.		हिन्दी लेखन कौशल	DSE-3	3	3	45 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
उपर्युक्त में से किन्हीं दो का चयन करें।						

S.S. Jain Subodh P.G. (Autonomous) College, Jaipur

Department of Hindi

Bachelor of Arts

Scheme of Examinations & Syllabus w.e.f. 2023-24

Semester I

Paper No	Nomenclature of the Paper	ESE	Int.	Total	Time
1	हिन्दी काव्य– प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य–I	54	21	75	3 Hrs.
2	हिन्दी कहानी	54	21	75	3 Hrs.

Semester II

Paper No	Nomenclature of the Paper	ESE	Int.	Total	Time
1	हिन्दी काव्य– प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य –II	54	21	75	3 Hrs.
2	हिन्दी उपन्यास	54	21	75	3 Hrs.

Semester III

Paper No	Nomenclature of the Paper	ESE	Int.	Total	Time
1	प्रयोजनपरक हिन्दी–I	54	21	75	3 Hrs.
2	हिन्दी निबंध	54	21	75	3 Hrs.

Semester IV

Paper No	Nomenclature of the Paper	ESE	Int.	Total	Time
1	प्रयोजनपरक हिन्दी–II	54	21	75	3 Hrs.
2	हिन्दी नाटक	54	21	75	3 Hrs.

Semester V

Paper No	Nomenclature of the Paper	ESE	Int.	Total	Time
1	हिन्दी काव्य – आधुनिक हिन्दी काव्य –I	54	21	75	3 Hrs.
2	हिन्दी भाषा व्याकरण और साहित्य सिद्धान्त –I	54	21	75	3 Hrs.
3	व्यावसायिक सम्प्रेषण हेतु हिन्दी कौशल	54	21	75	3 Hrs.

Semester VI

Paper No	Nomenclature of the Paper	ESE	Int.	Total	Time
1	हिन्दी काव्य – आधुनिक हिन्दी काव्य –II	54	21	75	3 Hrs.
2	हिन्दी भाषा व्याकरण और साहित्य सिद्धान्त–II	54	21	75	3 Hrs.
3	हिन्दी लेखन कौशल	54	21	75	3 Hrs.

स्नातक प्रथम वर्ष – कला
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – प्रथम प्रश्न–पत्र
हिन्दी काव्य–प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य–।

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न अतिलघूत्तरात्मक (काव्य सौन्दर्य विषयक, शब्द सीमा : 20 शब्द)	9×1 = 9 अंक
2.	3 व्याख्याएं	3×6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×09 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

नोट : अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न काव्य सौन्दर्य विषयकः शब्द सीमा : 20 शब्द, लघूत्तरात्मक, व्याख्यामूलक एवं टिप्पणीपरक प्रश्न शब्द सीमाः 150 शब्द और निबंधात्मक प्रश्न आलोचनात्मक शब्द सीमाः 300 शब्द (आंतरिक विकल्प देय होंगे)

उद्देश्य (Objective) :–

1. इसमें आदिकाल, मध्यकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्ष से विद्यार्थियों को जोड़ना है।
2. उस दौर में रचे भाषा के इतिहास, जिसमें पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज में लिखे कवियों की रचनाओं में समाहित उनके दर्शन से परिचय कराना है। जिससे विद्यार्थियों में मानवीय दृष्टि विकसित हो सके।
3. विद्यार्थी भाषा के महत्व को जानकर उसमें और अधिक नवाचार लाने, सहज ग्राह्य बनाने का प्रयास कर सके।
4. मौलिक रूप से स्वयं के शब्दकोश को समृद्धशाली बना सके।

खण्ड–क–

1. **कबीर दास** : कबीर ग्रन्थावली : सम्पादक श्यामसुन्दर दास : गुरुदेव कौ अंग (प्रथम 10 साखियां), सुमिरण कौ अंग (प्रथम 10 साखियां), विरह कौ अंग (प्रथम 10 साखियां) एवं कबीर ग्रन्थावली के प्रथम पांच पद।
2. **सूरदास** : सम्पादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, (कुल 20 : विनय तथा भक्ति– 2, 10, 21, 23, 25, गोकुल लीला–19, वृन्दावन लीला– 13, 42, राधाकृष्ण 2, 63, 106, मथुरा गमन 58, 68, 93 उद्धव संदेश – 2, 55, 95, 125, 187 और द्वारकाचरित – 50 वां पद)
3. **तुलसीदासः** 'तुलसी ग्रन्थावली' (मानसेत्तर एकादश ग्रंथ) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, विनयपत्रिका (105, 162, 172, 174, 198), कवितावली (अयोध्याकाण्ड– 11, 12, 13, 18, 19, 20 और 22 वां पद।)
4. मीरा : मीरां मुक्तावलीः सम्पादक नरोत्तम स्वामी प्रारम्भ के 25 पद।

20 घण्टे / कक्षा

खण्ड – ख – आधुनिक पूर्व हिन्दी साहित्य का इतिहास –

प्रमुख इतिहास – ग्रंथ, हिन्दी साहित्य का आरंभ, काल विभाजन और नामकरण, आदिकाल की सामग्री : प्रकृति और प्रामाणिकता की समस्या, आदिकाल : परिवेश और प्रवृत्तियाँ, भक्ति आन्दोलन : उदय के कारण ,अखिल भारतीय और अन्तः प्रादेशिक वैशिष्ट्य, महत्व, भक्ति सम्बन्धी प्रमुख दार्शनिक सम्प्रदाय, निर्गुण – सगुण भक्तिः स्वरूप, साम्य एवं अन्तर, हिन्दी भक्ति – कविता की विभिन्न धाराएँ।

15 घण्टे / कक्षा

खण्ड–ग – निम्नलिखित रचनाकारों / रचनाओं का सामान्य परिचयात्मक अध्ययन–

चन्दबरदाई का पृथ्वीराज रासो, नरपति नाल्ह का बीसलदेव रासो, अमीर खुसरो, गोरखनाथ, विद्यापति, दादूदयाल, रैदास, नानक, रज्जब और सर्वंगी, ढोला – मारू रा दूहा, मुल्ला दाउद का चंदायन।

10 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य प्रश्न–पत्र पढ़ने से विद्यार्थियों को उस दौर के काव्य एवं कवियों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे विद्यार्थियों में सत्य, प्रेम, शान्ति, सद्भाव, परोपकार, नैतिकता, सादगी, सहिष्णुता जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है जिससे उनका चरित्र–निर्माण हो सकेगा।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्राचीन कवि : विश्वम्भर मानव, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : स. डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल, मयूर पैपर बैक्स, नई दिल्ली, 1973।

स्नातक प्रथम वर्ष – कला
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – द्वितीय प्रश्न–पत्र
हिन्दी कहानी

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न अतिलघूत्तरात्मक (काव्य सौन्दर्य विषयक, शब्द सीमा : 20 शब्द)	9×1 = 9 अंक
2.	3 व्याख्याएं	3×6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×9 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

नोट : अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न काव्य सौन्दर्य विषयकः शब्द सीमा : 20 शब्द,
लघूत्तरात्मक, व्याख्यामूलक एवं टिप्पणीपरक प्रश्न शब्द सीमाः 150 शब्द और
निबंधात्मक प्रश्न आलोचनात्मक शब्द सीमाः 300 शब्द (आंतरिक विकल्प देय होंगे)

उद्देश्य (Objective) :–

1. उपन्यास, कहानी आदि गद्य साहित्य की अनिवार्यता साहित्य में इसलिए है क्योंकि विद्यार्थी में इसके अध्ययन से सामाजिक दृष्टिकोण स्थापित होता है।
2. विभिन्न लेखकों द्वारा रचित पात्रों के माध्यम से वह समय को आत्मसात करता हुआ उसके समग्र मनोविज्ञान का अध्ययन करता है।
3. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित करना।
4. भविष्य में इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर हैं।
5. प्रतियोगिता परीक्षाओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण।

खण्ड–क कहानियाँ–

1. प्रेमचन्द : पूस की रात, 2. जयशंकर प्रसादः मधुआ, 3. जैनेन्द्र कुमार : खेल, 4. यशपाल : करवा का व्रत,
5. मोहन राकेश : मलबे का मालिक। 12 घण्टे / कक्षा

खण्ड–ख

6. अमरकान्तः दोपहर का भोजन, 7. फणीश्वरनाथ रेणुः लाल पान की बेगम, 8. निर्मल वर्माः बीच बहस में,
9. नासिरा शर्मा : सरहद के इस पार, 10. चित्रा मुद्गल : जिनावर। 13 घण्टे / कक्षा

खण्ड–ग हिन्दी कहानी : कहानी : परिभाषा और तत्व, आरम्भिक कहानियाँः गुलेरी, प्रेमचन्द के अनुवर्ती : सुदर्शन, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, अमृतलाल नागर, अज्ञेय, शिव प्रसाद सिंह, कृष्णा सोबती, धर्मवीर भारती, नयी कहानीः मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, उषा प्रियम्वदा, स्वयंप्रकाश, राजी सेठ। साठोत्तर आन्दोलन : अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, समकालीन कहानी– परिदृश्य। 20 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. हिन्दी गद्य की विविध विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा आदि के अध्ययन से विद्यार्थियों में परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति नवीन दृष्टिकोण स्थापित हो सकेगा।
2. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित हो सकेगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं एवं रोजगार की दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान : डॉ. रामदरश मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. कहानी : नई कहानी : डॉ. नामवर सिह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी कहानी का इतिहास : भाग 1, 2, 3 : डॉ. गोपाल राय।

स्नातक प्रथम वर्ष – कला
द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – प्रथम प्रश्न–पत्र
हिन्दी काव्य–प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य– II

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न अतिलघूत्तरात्मक (काव्य सौन्दर्य विषयक, शब्द सीमा : 20 शब्द)	9×1 = 9 अंक
2.	3 व्याख्याएं	3×6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×09 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

नोट : अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न काव्य सौन्दर्य विषयकः शब्द सीमा : 20 शब्द,
लघूत्तरात्मक, व्याख्यामूलक एवं टिप्पणीपरक प्रश्न शब्द सीमाः 150 शब्द और
निबंधात्मक प्रश्न आलोचनात्मक शब्द सीमाः 300 शब्द (आंतरिक विकल्प देय होंगे)

उद्देश्य (Objective) :–

1. इसमें आदिकाल, मध्यकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्ष से विद्यार्थियों को जोड़ना है।
2. उस दौर में रचे भाषा के इतिहास, जिसमें पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज में लिखे कवियों की रचनाओं में समाहित उनके दर्शन से परिचय कराना है। जिससे विद्यार्थियों में मानवीय दृष्टि विकसित हो सके।
3. विद्यार्थी भाषा के महत्व को जानकर उसमें और अधिक नवाचार लाने, सहज ग्राह्य बनाने का प्रयास कर सके।
4. मौलिक रूप से स्वयं के शब्दकोश को समृद्धशाली बना सके।

खण्ड – क

1. बिहारी : बिहारी सार्धशतीः सम्पादक डॉ. ओमप्रकाश प्रारम्भ के 25 दोहे।
2. घनानन्द : घनानन्द कवित (प्रथम शतक)ः सम्पादक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्रः छन्द : 2, 3, 4, 5, 9, 12, 13, 14, 15, 27, 60, 66, 68, 70, 73, 75, 82, 87 और 97वां पद।
3. सूर्यमल्ल मीसणः वीर सतसईः सं. कन्हैयालाल सहल 30 दोहेः 1, 5, 9 से 30 और 34 से 39 वें पद तक।
4. उद्धवशतक– बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर प्रारम्भ के 30 पद।

24 घण्टे / कक्षा

खण्ड–ख आधुनिक पूर्व हिन्दी साहित्य का इतिहास : रीति–काव्यः दरबारी संस्कृति, रीतिकाल की अन्तर्वस्तु, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, मुख्य धाराएँ – रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त और परम्परा की निरन्तरता। 12 घण्टे / कक्षा

खण्ड–ग निम्नलिखित रचनाकारों / रचनाओं का सामान्य परिचयात्मक अध्ययन–
नरोत्तमदास का सुदामाचरित, नन्ददास का भंवरगीत, देव, सेनापति, पद्माकर, भूषण, रहीमदास। 09 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य प्रश्न–पत्र पढ़ने से विद्यार्थियों को उस दौर के काव्य एवं कवियों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे विद्यार्थियों में सत्य, प्रेम, शान्ति, सद्भाव, परोपकार, नैतिकता, सादगी, सहिष्णुता जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है जिससे उनका चरित्र–निर्माण हो सकेगा।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्राचीन कवि : विश्वम्भर मानव, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल, मयूर पैपर बैक्स, नई दिल्ली, 1973।

स्नातक प्रथम वर्ष – कला
द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – द्वितीय प्रश्न–पत्र
हिन्दी उपन्यास

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न अतिलघूत्तरात्मक (काव्य सौन्दर्य विषयक, शब्द सीमा : 20 शब्द)	9×1 = 9 अंक
2.	3 व्याख्याएं	3×6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×09 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

नोट : अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न काव्य सौन्दर्य विषयकः शब्द सीमा : 20 शब्द,
लघूत्तरात्मक, व्याख्यामूलक एवं टिप्पणीपरक प्रश्न शब्द सीमाः 150 शब्द और
निबंधात्मक प्रश्न आलोचनात्मक शब्द सीमाः 300 शब्द (आंतरिक विकल्प देय होंगे)

उद्देश्य (Objective) :–

1. उपन्यास, कहानी आदि गद्य साहित्य की अनिवार्यता साहित्य में इसलिए है क्योंकि विद्यार्थी इसके अध्ययन से सामाजिक दृष्टिकोण स्थापित करता है।
2. विभिन्न लेखकों द्वारा रचित पात्रों के माध्यम से वह समय को आत्मसात करता हुआ उसके समग्र मनोविज्ञान का अध्ययन करता है।
3. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित करना।
4. भविष्य में इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर है।
5. प्रतियोगिता परीक्षाओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण।

खण्ड–क– हिन्दी उपन्यास : परिभाषा एवं तत्व, प्रेमचन्द के पूर्व, प्रेमचन्द और उनका युग, यथार्थवाद का हिन्दी में आविर्भाव, हिन्दी उपन्यास में नायक की बदलती अवधारणा, जैनेन्द्र कुमार और 'त्यागपत्र,' प्रसाद की यथार्थ चेतनाः 'कंकाल', अज्ञेय और 'शेखरः एक जीवनी,' हजारी प्रसाद द्विवेदी और 'बाणभट्ट की आत्मकथाः यशपाल और 'दिव्या', अमृतलाल नागर और 'नाच्यो बहुत गुपाल।
21 घण्टे / कक्षा

12 घण्टे / कक्षा
खण्ड–ख– महाभोज–मन्नू भण्डारी (उपन्यास) सम्पूर्ण।

खण्ड–ग– आंचलिक उपन्यास और रेणु का मैला आंचल; चित्रा मुद्गल – एक जमींन अपनी; श्रीलाल शुक्ल – 'राग दरबारी', मनोहर श्याम जोशी – 'कुरु–कुरु स्वाहा; भीष्म साहनी – तमस; आखिरी दशक के उपन्यासः अलका सरावगी– शेष कादम्बरी।
12 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. हिन्दी गद्य की विविध विविध विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा आदि के अध्ययन से विद्यार्थियों में परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति नवीन दृष्टिकोण स्थापित हो सकेगा।
2. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित हो सकेगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं एवं रोजगार की दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रेमचन्द के उपन्यासों का शिल्प विधान : डॉ. कमलकिशोर गोयनका।
2. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : स. भीष्म साहनी और रामजी मिश्र।
3. हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास : डॉ. हेतु भारद्वाज, डॉ. सुमनलता, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2005।

स्नातक द्वितीय वर्ष – कला

तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य – प्रथम प्रश्न– पत्र

प्रयोजनपरक हिन्दी– I

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1.	9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न)	9×1 = 9 अंक
2.	6 लघूत्तरात्मक प्रश्न	6×3 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×9 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. यह प्रश्न पत्र क्यों पढाया जाए ? अपने नाम की सार्थकता को सिद्ध करते हुये किसी विशेष प्रयोजन अर्थात् रोजगार की दिशा में छात्रों को आगे बढ़ाता है।
2. प्रयोजनपरक हिन्दी वर्तमान में इसलिये आवश्यक है क्योंकि भूमंडलीकरण के दौर में पूरा विश्व मीडिया की गिरफ्त में है और इस मीडिया की सम्पूर्ण जानकारी विविध संचार माध्यमों द्वारा इस प्रश्न पत्र में पढ़ायी जाती है।
3. प्रयोजनपरक हिन्दी विद्यार्थियों के लिये इस रूप में उपयोगी है इस विषय में निपुण छात्र–छात्राएं रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, इन्टरनेट विज्ञापन और तकनीक के क्षेत्र में विभिन्न उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं।
4. प्रयोजनपरक हिन्दी विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में उन्हें रोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ाकर लाभदायक सिद्ध हो सकती है। भविष्य में वे एक अच्छे संवाददाता, पटकथा लेखक, कलाकार तथा फिल्म लेखक भी बन सकते है।
5. प्रयोजनपरक हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट और तकनीक के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। प्रयोजनपरक हिन्दी में दक्ष छात्र टी.वी. और रेडियो रिपोटर, उद्घोषक, समाचारवाचक, कार्यक्रम संयोजक, डॉक्यूमेंट्री राइटर, ट्रेलीड्रामा, संवाद लेखक, अनुवादक, प्रूफरीडर, संपादक, गीतकार, फिल्मकार, कवि और अच्छे भाषाविद् बन सकते हैं।

खण्ड क–
1. प्रयोजनपरक हिन्दी : अवधारणा और विविध क्षेत्र
2. प्रयोजनपरक हिन्दी के सृजनात्मक आयाम–(पत्र लेखन–सरकारी, अर्ध सरकारी, कार्यालय–आदेश)

10 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख–
माध्यम लेखनः
1. विविध संचार माध्यम : परिचय एव कार्यविधि–
   (1) श्रव्य माध्यम : रेडियो
   (2) श्रव्य–दृश्य माध्यम : टेलीविजन और फिल्म
   (3) तकनीकी माध्यम : इंटरनेट
   (4) मिश्र माध्यम : विज्ञापन
   (5) समाचार पत्र

15 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग–
1. रेडियो–लेखनः उद्घोषणा, कार्यक्रम – संयोजन (कंपेयरिंग), समाचार, धारावाहिक, फीचर, रिपोर्ट, रेडियो नाटक, अवयव, रूप और प्रविधि।
2. टेलीविजन एवं फिल्म लेखन : वाचन, कार्यक्रम–संयोजन, डाक्यूमेंट्री, टेलीड्रामा, संवाद लेखन, पटकथा लेखनः प्रक्रिया और प्रविधि।
3. इन्टरनेटः सामगी सृजन, संयोजन एवं प्रेषण।

20 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह पाठ्यक्रम वर्तमान की आवश्यकता है। यह विद्यार्थियों के लिए रोजगारपरक है।
2. विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का गहनतापूर्वक अध्ययन कर प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट और तकनीक के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।
3. आज का दौर सूचनाओं, खबरों का है, मीडिया का है जो भविष्य में भी विस्तारित होगा और नौकरियों के द्वार खोलेगा, जो युवा पीढ़ी हेतु हितकर है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार : डॉ. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग : जी. गोपीनाथ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. मीडिया एव सूचना प्रोद्योगिकी कोश : प्रो. रमेश जैन एवं डॉ. कैलाश शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

स्नातक द्वितीय वर्ष – कला
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – द्वितीय प्रश्न–पत्र
हिन्दी निबंध

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नो के उत्तर दीजिए –

1	9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न)	9×1 = 9 अंक
2.	3 व्याख्याए	3×6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×9 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी निबंध हिन्दी साहित्य की नीव है। भाषा के समग्र ज्ञान के लिये इस प्रश्न पत्र का चुनाव किया जाता है।
2. हिन्दी निबध की वर्तमान में आवश्यकता यही है कि विद्यार्थी इस प्रश्न पत्र का ज्ञान प्राप्त कर अपने साहित्य के मूल को समझ पाते है और गद्य के उद्भव और विकास से परिचित हो पाते हैं।
3. हिन्दी निबंध विद्यार्थियों के लिये इस रूप में आवश्यक है इससे वे निबंध लेखन की प्रक्रिया से अवगत होते हुये निबंध के अर्थ, परिभाषा और स्वरूप को समझ पाने में सक्षम होते हैं।
4. हिन्दी निबंध भविष्य में उन विद्यार्थियों के लिये आवश्यक है जो लेखन के क्षेत्र में भविष्य बनाना चाहते हैं। एक लेखक के साथ–साथ निबंधकार के रूप में अपनी पहचान बना सकते हैं।
5. हिन्दी निबंध के क्षेत्र में रोजगार की अपार सम्भावनाएं है। भाषा के ज्ञान से समृद्ध विद्यार्थी एक अच्छा साहित्यकार, पटकथा लेखक, सृजनात्मक लेखक, अनुवादक और फिल्म निर्माता भी बन सकता है।

खण्ड क– निबंध –
(1) सरदार पूर्ण सिह : आचरण की सभ्यता, (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : श्रद्धा और भक्ति, (3) महादेवी वर्मा : यथार्थ और आदर्श, (4) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी: कुटज। 10 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– (1) अज्ञेयः सभ्यता का संकट, (2) विद्यानिवास मिश्रः मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, (3) निर्मल वर्मा : संवाद की मर्यादाएं, (4) कुबेरनाथ राय : राघवः करूणो रस; (5) हरिशंकर परसाईः वैष्णव की फिसलन। 15 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग– हिन्दी निबन्ध परिभाषा, स्वरूप और शैलियॉं, प्रमुख निबंधकार– बाल कृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बालमुकुन्द गुप्त, महावीरप्रसाद द्विवेदी, गुलाब राय, जयशंकर प्रसाद, रायकृष्णदास, वासुदेवशरण अग्रवाल, पद्मसिंह शर्मा, शरद जोशी और ज्ञान चतुर्वेदी। 20 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. हिन्दी गद्य की विविध विविध विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा आदि के अध्ययन से विद्यार्थियों में परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति नवीन दृष्टिकोण स्थापित हो सकेगा।
2. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित हो सकेगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं एवं रोजगार की दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. ललित निबंध : स्वरूप और परम्परा – श्रीराम परिहार, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली।
2. हिन्दी निबंध और निबंधकार : रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. समकालीन हिन्दी निबंध : कमला प्रसाद, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, हरियाणा।

स्नातक द्वितीय वर्ष – कला
चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – प्रथम प्रश्न– पत्र
प्रयोजनपरक हिन्दी– ।।

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) — 9×1 = 9 अंक
2. 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न — 6×3 = 18 अंक
3. 3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक) — 3×09 = 27 अंक

54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्याकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. प्रयोजनपरक हिन्दी इसलिये पढ़ायी जाती है कि इससे विद्यार्थी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर उसे कार्यरूप में रोजगार के क्षेत्र में प्रयुक्त कर सके।
2. प्रयोजनपरक हिन्दी वर्तमान में बहुत आवश्यक है। भूमंडलीकरण के दौर में हम प्रयोजनपरक हिन्दी के माध्यम से पूरे विश्व से तकनीकी रूप से जुड सकते है।
3. प्रयोजनपरक हिन्दी विद्यार्थियों के लिये इसलिये आवश्यक है क्योंकि इस विषय का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे अपनी दक्षता साबित कर सकते हैं।
4. प्रयोजनपरक हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी अपने भविष्य का निर्माण रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में कर सकते हैं। विज्ञापन लेखक और अनुवादक के रूप में तथा मीडिया में विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की प्राप्ति कर सकते हैं।
5. प्रयोजनपरक हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी अनुवाद के क्षेत्र में श्रेष्ठ अनुवादक, द्विभाषिय समाचार वाचक, स्क्रिप्ट राइटर, क्रिएटिव राइटर, उद्घोषक आदि बन सकते है। कई देशी विदेशी मीडिया संस्थान, राजनीतिक संस्थाएं, पर्यटठन से जुंड़े संस्थान, बडे–बड़े होटल में अनुवादकों और द्विभाषियों की बहुत मांग है।

खण्ड क–
1. विज्ञापन– लेखनः उद्देश्य और स्वरूप, विज्ञापन में नैतिकता और संस्कृति माध्यमगत वैशिष्ट्य।
2. साहित्यिक कृतियों का माध्यम रूपान्तरण।

08 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– अनुवाद –
1. अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप और महत्व
2. अनुवादः प्रकार 3. अनुवाद प्रक्रिया, 4. अनुवाद और समतुल्यता, 5. अनुवाद कार्य की प्रकृति,
6. अनुवाद समीक्षा 7. अनुवाद की समस्याएँ पारिभाषिक शब्दावली, साहित्यानुवाद एवं अन्य प्रमुख क्षेत्र।

20 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग– अनुवाद – कार्य : अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद, प्रशासनिक एवं पारिभाषिक शब्दावली का हिन्दी अनुवाद। अनुवाद–कार्य के अन्तर्गत नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद से प्रकाशित गांधीजी की आत्मकथा (अंग्रेजी अनुवाद– महादेव देसाई) के प्रारम्भिक पांच परिच्छेदों से चयनित एक अंश का हिन्दी अनुवाद।

17 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह पाठ्यक्रम वर्तमान की आवश्यकता है। यह विद्यार्थियों के लिए रोजगारपरक है।
2. विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का गहनतापूर्वक अध्ययन कर प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट और तकनीक के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।
3. आज का दौर सूचनाओं, खबरों का है, मीडिया का है जो भविष्य में भी विस्तारित होगा और नौकरियों के द्वार खोलेगा, जो युवा पीढ़ी हेतु हितकर है।
4. प्रयोजनपरक हिन्दी के साथ–साथ अनुवाद के क्षेत्र में भी रोजगार की असीम सम्भावनाएँ हैं। आज श्रेष्ठ अनुवादक, द्विभाषिय समाचार वाचक, उदघोषक आदि की महती आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अनुवाद सिद्धान्त एवं समस्याएँ : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
2. अनुवाद सिद्धांत : डॉ. भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली।
3. अनुवाद सिद्धात एव प्रयोग : जी. गोपीनाथ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

स्नातक द्वितीय वर्ष – कला
चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य – द्वितीय प्रश्न–पत्र
हिन्दी नाटक

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1.	9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न)	9×1 = 9 अंक
2.	3 व्याख्याएं	3×6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×9 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी नाटक महाविद्यालय स्तर पर इसलिये पढ़ाया जाना आवश्यक है इससे हिन्दी की विभिन्न विधाओं के साथ–साथ नाटक के विभिन्न रूपों से विद्यार्थी अवगत हो सकें।
2. नाटक को वर्तमान में इसलिये पढ़ाया जाना आवश्यक है कि विद्यार्थी नाटक की विधा को, उसकी ऐतिहासिकता के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति को समझ पाने में सक्षम हो सकें।
3. विद्यार्थियों के लिये नाटक बहुत उपयोगी है। इससे छात्रों में रंगमंच (थियेटर) की समझ विकसित हो सकेगी और वे नाटकों का मंचन सफलतापूर्वक कर सकेंगे।
4. हिन्दी नाटक भविष्य में छात्रों के लिये बहुत लाभदायक है। भूमंडलीकरण के दौर में अपने साहित्य को देश–विदेश में नाटकों के मंचन के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते है। मीडिया के युग में भारतीय संस्कृति और सभ्यता को नाटक के माध्यम से छात्र दिखा सकते है।
5. हिन्दी नाटक की समझ प्राप्त कर विद्यार्थी रोजगार के क्षेत्र में अनंत सम्भावानाओं को तलाश सकते हैं। एक श्रेष्ठ नाटककार, स्क्रिप्ट राइटर, नाटक निर्माता और फिल्मकार बन सकते हैं। नुक्कड़ नाटक से लेकर विश्व के विस्तृत फलक फिल्म तक एक नाटककार अपने नाटक के माध्यम से अपनी संस्कृति और सभ्यता को प्रदर्शित कर सकता है।

खण्ड क– नाटक – चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद। 15 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– हिन्दी नाटक : परिभाषा एवं तत्व, उद्भव और विकास, हिन्दी में नाटक का आरम्भ और भारतेन्दु के नाटक, पारसी नाटक और रंगमंच, नाटक और रंगमंच का संबंध, नाटककार प्रसाद, मोहन राकेश, समस्या नाटक और लक्ष्मी नारायण मिश्र, एब्सर्ड नाटक और भुवनेश्वर, एकांकी नाटककार रामकुमार वर्मा। 20 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग– विष्णु प्रभाकर और रेडियो नाटक, नाटककार जगदीशचन्द्र माथुर, गीतिनाट्य और धर्मवीर भारती, नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल, नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, सुरेन्द्र वर्मा, शंकर शेष और मणि मधुकर। 10 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. हिन्दी गद्य की विविध विविध विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा आदि के अध्ययन से विद्यार्थियों में परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति नवीन दृष्टिकोण स्थापित हो सकेगा।
2. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित हो सकेगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं एवं रोजगार की दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण : डॉ. विजयमोहन सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2015।
2. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास : डॉ. हेतु भारद्वाज, डॉ. सुमनलता, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2006।
3. बींसवी सदी में हिन्दी नाटक और रंगमंच : डॉ. गिरीश रस्तोगी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
4. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास : डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

स्नातक तृतीय वर्ष – कला
पंचम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य–प्रथम प्रश्न–पत्र
हिन्दी काव्य – आधुनिक हिन्दी काव्य–I

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1	9 प्रश्न अतिलघूत्तरात्मक (काव्य सौन्दर्य विषयक, शब्द सीमा : 20 शब्द)	9×1 = 9 अंक
2	3 व्याख्याए	3×6 = 18 अंक
3	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×09 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

नोट : अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न काव्य सौन्दर्य विषयकः शब्द सीमा : 20 शब्द,
लघूत्तरात्मक, व्याख्यामूलक एवं टिप्पणीपरक प्रश्न शब्द सीमाः 150 शब्द और
निबंधात्मक प्रश्न आलोचनात्मक शब्द सीमाः 400 शब्द (आंतरिक विकल्प देय होंगे)

उद्देश्य (Objective) :–

1. आज की इस भागदौड भरी जिन्दगी में थोड़े से ठहराव के लिये साहित्य के माध्यम से अतीत के सुनहरे दौर मे जाया जा सकता है, खासतौर से इक्कीसवीं सदी के बच्चों को विशेष रूप से उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में लिखे गये साहित्य को जरूर पढ़ना व समझना चाहिए।
2. इंटरनेट के इस दौर में हिन्दी के आधुनिक कवियों की किताबें बहुत लाभदायक है। आज के दौर में हिन्दी वेब कंटेन्ट को ज्यादा पढा जाने लगा है।
3. हिन्दी का अध्ययन करने वालो के लिये अध्यापन एक पारम्परिक कॅरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है।
4. UPSC सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक साहित्यिक विषयों की सूची में शामिल किया गया है। IAS मुख्य परीक्षा मे अनिवार्य भाषा के प्रश्न पत्र के लिये हिन्दी भी एक विकल्प है। आधुनिक काव्य की सभी मुख्य कविताओं, सभी कवियों का परिचय, गद्य साहित्य की अधिकांशतः विधाओ को इस (IAS) परीक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है।

खण्ड क– निर्धारित पाठ्यांश –

1. जयशंकर प्रसाद : 1. उठ उठ री लघु लोल लहर, 2. ले चल वहाँ भुलावा देकर, 3. बीती विभावरी जाग री, 4. मेरी आंखों की पुतली में, 5. पेशोला की प्रतिध्वनि।
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाः 1. संध्या सुन्दरी, 2. सखि, बसन्त आया, 3. बादल–राग–6, 4. स्नेह–निर्झर बह गया है, 5. प्रिया के प्रति, 6. राजे ने रखवाली की।
3. महादेवी वर्मा : 1. जो तुम आ जाते एक बार, 2. कौन तुम मेरे हृदय में ? 3. मधुर–मधुर मेरे दीपक जल, 4. सब आंखों के आंसू उजले, 5. निशा को धो देता राकेश, 6. मैं नीर भरी दुख की बदली, 7. रूपसि तेरा घन केश–पाश।
4. रामधारी सिंह दिनकर : 1. 'कुरुक्षेत्र' का सातवां सर्ग। 21 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास –
आधुनिकता की पहचान और हिन्दी कविता, हिन्दी नवजागरण, कविता में प्रकृति, अध्यात्म, राष्ट्रीयता एवं सुधार, छायावादः प्रेरणा एवं पृष्ठभूमि, छायावाद के राष्ट्रीय–सांस्कृतिक–सामाजिक–सरोकार और प्रगतिवादः वैचारिक आधार एवं प्रतिबद्धता। 12 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग– निम्नलिखित रचनाकारों, उनकी रचनात्मक विशेषताओं तथा कृति विशेष का सामान्य परिचयात्मक अध्ययन–
श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानन्दन पंत, बालकृष्ण शर्मा नवीन, हरिवंशराय बच्चन, सुभद्रा कुमारी चौहान, नागार्जुन और त्रिलोचन। 12 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. आधुनिक हिन्दी काव्य प्रश्न–पत्र से विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य में आधुनिकता, नवजागरण, प्रकृति अध्यात्म, राष्ट्रीयता, देशप्रेम की भावना का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो पायेगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आ. रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : स. डॉ. नगेन्द्र एव डॉ. हरदयाल, मयूर पैपर बैक्स, नई दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. आधुनिक कवि : विश्वम्भर मानव, डॉ. रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008।
5. आधुनिक कवि : डॉ. हरिचरण शर्मा, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर।

स्नातक तृतीय वर्ष – कला

पंचम सेमेस्टर पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य–द्वितीय प्रश्न–पत्र

हिन्दी भाषा व्याकरण और साहित्य सिद्धान्त–I

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नो के उत्तर दीजिए–

1. 9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 9×1 = 9 अंक
2. 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न टिप्पणीपरक(आंतरिक विकल्प देय) 6x3 = 18 अंक
3. 3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक) 3×09=27 अंक

54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी भाषा लगातार लोकप्रिय होती जा रही है। सोशल मीडिया से लेकर तमाम प्लेटफार्म पर हिन्दी का बोलबाला है। इसके साथ ही हिन्दी में रोजगार या कॅरियर बनाने के विकल्पों में भी लगातार इजाफा होता जा रहा है।
2. शिक्षा, पब्लिशिंग हाउस, मीडिया, सामाजिक सेवाएं, संचार, कम्प्यूटर, लैंग्वेज, अनुसंधान, भाषा संबंधी क्षेत्रों में भाषा विज्ञान के बारे में अनुभव बेहद जरूरी है। हाल के वर्षों में विभिन्न उद्योगों में भाषा–विज्ञानियों की बेहद मांग है।
3. हिन्दी दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। एक रिपोर्ट के अनुसार इस समय दुनियाभर मे हिन्दी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से ज्यादा है, वहीं हिन्दी समझ सकने वाले लोगों की संख्या करीब एक अरब से ज्यादा है।
4. प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय मंच और संस्थाओं में हिन्दी के प्रयोग से बहुत लाभ हुआ है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएपप जैसे प्लेटफॉर्म पर अब हिन्दी का ही दबदबा है। ऐसे में कॅरियर की भी संभावनाएं हैं।
5. केन्द्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहाँ हर प्रकार से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देते है और हिन्दी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। यदि आप हिन्दी विषय के रूप में अंग्रेजी भी पढ़ी है तो राजभाषा अधिकारी या हिन्दी अनुवादक के रूप में भी कॅरियर बनाया जा सकता है।
6. नयी हिन्दी के जो क्षेत्र उभरे है उनमें यदि छात्र दक्षता हासिल कर लेता है तो सिनेमा में पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत लेखन में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं।

खण्ड क– हिन्दी भाषा :
भारतीय भाषाएं और हिन्दी, हिन्दी भाषा का उद्भव और विकासः अवहट्ट और पुरानी हिन्दी, काव्य–भाषा के रूप में अवधी और ब्रज का विकास, खडी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में रूपान्तरण तथा राष्ट्र भाषा के रूप में विकास, राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास और समस्याएँ, हिन्दी भाषा का विस्तारः शिक्षा, ज्ञान और तकनीक की भाषा, हिन्दी भाषा के प्रयोग के प्रमुख रूप : बोली, मानक भाषा, सम्पर्क भाषा, राजभाषा–राष्ट्र भाषा, संचार (तकनीक) भाषा। 25 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– हिन्दी और उसकी बोलियाँ: अवधी, ब्रज, खड़ी बोली तथा राजस्थानी समूह (मारवाडी, मेवाती, ढूँढाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी, बागडी और मालवी) मानक हिन्दी के प्रमुख व्याकरणिक अभिलक्षण। 08 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग– देवनागरी लिपिः उद्भव, विकास, विशेषताएँ, हिन्दी ध्वनियों एवं देवनागरी लिपि का मानकीकरण, मानक लिपिमाला (वर्णमाला)। 12 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह एक रोजगारपरक पाठ्यक्रम है। हाल के वर्षों मे विभिन्न उद्योगों में भाषा–विज्ञानियो की बेहद माँग है।
2. हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास का अध्ययन कर विद्यार्थी इस क्षेत्र में अपना करिअर बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास : डॉ. किरणबाला, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989।
2. हिन्दी भाषा : विकास और स्वरूप : डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली।
3. हिन्दी भाषा का उदगम और विकास : डॉ. उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद।

स्नातक तृतीय वर्ष – कला

पंचम सेमेस्टर पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य–तृतीय प्रश्न–पत्र

व्यावसायिक सम्प्रेषण हेतु हिन्दी कौशल

03 क्रेडिट 45 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न)	9×1 = 9 अंक
2.	6 लघूत्तरात्मक प्रश्न टिप्पणीपरक (आंतरिक विकल्प देय)	6x3 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×9 = 27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. व्यावसायिक सम्प्रेषण वर्तमान में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण बन गया है। इसके जरिये प्रबंधक एवं कर्मचारियों के बीच समन्वय स्थापित होता है।
2. विद्यार्थियों में व्यावसायिक सम्प्रेषण विकसित करना।
3. व्यावसायिक भाषा–शैली से परिचित कराना।
4. किसी भी व्यवसाय की सफलता की पहली शर्त सम्प्रेषण है।

खण्ड क– व्यावसायिक सम्प्रेषण की अवधारणा : प्रकिया, बाधाएं व उपाय

- भाषा का एकार्थी – स्पष्ट प्रयोग
- भाषा के संकेतार्थ
- व्यवसाय विशेष की शब्दावली
  – व्यवसाय विशेष की स्थानीय और व्यापक शब्दावली

20 घण्टे/कक्षा

खण्ड ख– व्यवसायिक पत्र लेखन –

- पत्र/बीजक/पावती के प्रारूप
- वाणिज्यिक पत्र
- व्यावसायिक रिपोर्ट
- आवेदन पत्र (नौकरी हेतु)
- धन्यवाद पत्र

15 घण्टे/कक्षा

खण्ड ग–

1. विज्ञापन लेखन/निविदा सूचना
2. व्यावसायिक लेखन मे विधिक सजगता
3. पारिभाषिक / कार्यालयी शब्दावली

10 घण्टे/कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह एक रोजगारपरक पाठ्यक्रम है इसका अध्ययन कर विद्यार्थी अपना भविष्य निर्माण कर सकता है।
2. व्यक्ति के सामाजिक जीवन में गतिशीलता लाना भी इसका एक उद्देश्य है।
3. व्यावसायिक संचार के उद्देश्यों में सूचित करना, मनाना और सद्भावना को बढ़ावा देना।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. पारिभाषिक व्यावसायिक सम्प्रेषण – प्रो डॉ. पी. के. जैन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. व्यावसायिक संगठन एवं सम्प्रेषण, डॉ. एस. सी. सक्सेना, प्रो. वी.पी. अग्रवाल, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।
3. व्यावसायिक संगठन एवं सम्प्रेषण, डॉ. एस. सी. जैन, कैलास पुस्तक सदन, भोपाल।
4. सम्प्रेषण कौशल – डॉ प्रवीण कुमार अग्रवाल, साहित्य भवन, पब्लिकेशन, आगरा।
5. व्यावसायिक हिन्दी – डॉ. प्रेमचन्द पातंजलि, वाणी प्रकाशन।
6. व्यावसायिक सम्प्रेषण – डॉ. हंसराज पाल, डॉ. मंजुलता शर्मा हिन्दी माध्यम कार्यान्वय, निदेशालय दिल्ली वि. वि.।
7. फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प, डॉ. मनोहर प्रभाकर, अरविन्द चतुर्वेदी भोपाल।

[signatures]

स्नातक तृतीय वर्ष – कला
षष्ठ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य–प्रथम प्रश्न–पत्र
हिन्दी काव्य – आधुनिक हिन्दी काव्य–II

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक)	9×1= 9 अंक
2.	3 व्याख्याएं	3x6 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×09 =27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

नोट : अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न काव्य सौन्दर्य विषयकः शब्द सीमा : 20 शब्द,
लघूत्तरात्मक, व्याख्यामूलक एवं टिप्पणीपरक प्रश्न शब्द सीमाः 150 शब्द और
निबंधात्मक प्रश्न आलोचनात्मक शब्द सीमाः 300 शब्द (आंतरिक विकल्प देय होंगे)

उद्देश्य (Objective) :–

1. आज की इस भागदौड भरी जिन्दगी में थोड़े से ठहराव के लिये साहित्य के माध्यम से अतीत के सुनहरे दौर मे जाया जा सकता है, खासतौर से इक्कीसवीं सदी के बच्चों को विशेष रूप से उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में लिखे गये साहित्य को जरूर पढ़ना व समझना चाहिए।
2. इंटरनेट के इस दौर में हिन्दी आधुनिक कवियों की किताबें बहुत लाभदायक है। आज के दौर में हिन्दी वेब कंटेन्ट को ज्यादा पढ़ा जाने लगा है।
3. हिन्दी का अध्ययन करने वालो के लिये अध्यापन एक पारम्परिक करियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है।
4. UPSC सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक साहित्यिक विषयों की सूची में शामिल किया गया है। IAS मुख्य परीक्षा मे अनिवार्य भाषा के प्रश्न पत्र के लिये हिन्दी भी एक विकल्प है। आधुनिक काव्य की सभी मुख्य कविताओं, सभी कवियों का परिचय, गद्य साहित्य की अधिकांशतः विधाओ को इस (IAS) परीक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है।

खण्ड क– निर्धारित पाठ्यांश – 1. कितनी नावों में कितनी बार

1. अज्ञेय: 1. नदी के द्वीप, 2. हिरोशिमा, 3. सागर–मुद्रा– 2, 4. बना दे चितेरे, 5. कितनी नावों में कितनी बार
2. गजानन माधव मुक्तिबोध : 1. ब्रह्मराक्षस, 2. चांद का मुंह टेढ़ा है (कविता)
3. धूमिल : 1. अकाल–दर्शन, 2. प्रौढ़ शिक्षा — 20 घण्टे / कक्षा
4. ऋतुराज : 1. पांच सितारे, 2. एक कटे पेड की कहानी, 3. गरीब लोग, 4. रूको सूर्यास्त।

खण्ड ख– आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास– 12 घण्टे / कक्षा
प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तर कविता और समकालीन कविता।

खण्ड ग– निम्नलिखित रचनाकारों, उनकी रचनात्मक विशेषताओं तथा कृति–विशेष का सामान्य परिचयात्मक अध्ययनः
रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, भवानी प्रसाद मिश्र, विजयदेवनारायण साही, केदारनाथ सिंह, कुंवरनारायण, नरेश मेहता, दुष्यन्त कुमार और अरूण कमल। 13 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. आधुनिक हिन्दी काव्य प्रश्न–पत्र से विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य में आधुनिकता, नवजागरण, प्रकृति अध्यात्म, राष्ट्रीयता, देशप्रेम की भावना का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो पायेगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आ. रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल, मयूर पैपर बैक्स, नई दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. आधुनिक कवि : विश्वम्भर मानव, डॉ. रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008।
5. आधुनिक कवि : डॉ. हरिचरण शर्मा, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर।

स्नातक तृतीय वर्ष – कला
षष्ठ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य–द्वितीय प्रश्न–पत्र
हिन्दी भाषा व्याकरण और साहित्य सिद्धान्त–II

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 9×1 = 9 अंक
2. 9 लघूत्तरात्मक प्रश्न 09×5=45 अंक

54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी भाषा लगातार लोकप्रिय होती जा रही है। सोशल मीडिया से लेकर तमाम प्लेटफार्म पर हिन्दी का बोलबाला है। इसके साथ ही हिन्दी में रोजगार या करियर बनाने के विकल्पो में भी लगातार इजाफा होता जा रहा है।
2. शिक्षा, पब्लिशिंग, मीडिया, सामाजिक सेवाएं, संचार, कम्प्यूटर, लैंग्वेज, अनुसंधान, भाषा संबंधी क्षेत्रों में भाषा विज्ञान के बारे में अनुभव बेहद जरूरी है। हाल के वर्षों में विभिन्न उद्योगों में भाषा–विज्ञानियों की बेहद मांग है।
3. हिन्दी दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। एक रिपोर्ट के अनुसार इस समय दुनियाभर मे हिन्दी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से ज्यादा है, वहीं हिन्दी समझ सकने वाले लोगों की संख्या करीब एक अरब से ज्यादा है।
4. प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय मंच और संस्थाओं में हिन्दी के प्रयोग से बहुत लाभ हुआ है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म पर अब हिन्दी का ही दबदबा है। ऐसे में करियर की भी संभावनाएं हैं।
5. केन्द्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहाँ हर प्रकार से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं और हिन्दी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। यदि आप हिन्दी विषय के रूप में अंग्रेजी भी पढ़ी है तो राजभाषा अधिकारी या हिन्दी अनुवादक के रूप में भी करियर बनाया जा सकता है।
6. नयी हिन्दी के जो क्षेत्र उभरे हैं उनमें यदि छात्र दक्षता हासिल कर लेता है तो सिनेमा में पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत लेखन में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं।

खण्ड क– काव्य उपादानः अलंकार सम्प्रदाय, अलंकार स्वरूप और भेद, अलंकारों की काव्योपगिता प्रमुख अलंकारः यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रांतिमान, दृष्टान्त, व्यतिरेक, विरोधाभास, असंगति, विशेषोक्ति, विभावना, अन्योक्ति, वैणसगाई और मानवीकरण।
छन्दः संघटक तत्व और प्रकार, हिन्दी मे बहुप्रयुक्त कुछ छन्दों का परिचय (लक्षण–उदाहरण): कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा, अरिल्ल, चौपाई, बरवै, रोला, उल्लाला, छप्पय और कुण्डलिया। 20 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– काव्य उपादान–शब्द–शक्तिः अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, काव्य गुणः माधुर्य, ओज, प्रसाद।
रसः स्वरूप और अवयव, विभिन्न रसों का लक्षण–उदाहरण सहित परिचय–विश्लेषण, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण। 15 घण्टे / कक्षा
बिम्ब, प्रतीक, मिथक और फैंटेसी।

खण्ड ग– **व्याकरण : शब्द संरचनाः**
1. सन्धि,समास,
2. शब्द–प्रकार, स्रोत और संरचना के आधार पर शब्द–प्रकार, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रिया–विशेषण के प्रकार एवं प्रकार्य।

वाक्य संरचना– पद–परिचय, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रिया–विशेषण के प्रकार एवं प्रकार्य।
वाक्य–प्रकार : सरल, संयुक्त एवं मिश्र
वाक्य–विन्यास : उद्देश्य एवं विधेय
व्याकरणिक कोटियाँ : वचन, लिंग, पुरुष, कारक और वाच्य आदि। 10 घण्टे / कक्षा
वाक्य–शुद्धि।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह एक रोजगारपरक पाठ्यक्रम है। हाल के वर्षों मे विभिन्न उद्योगों में भाषा–विज्ञानियो की बेहद माँग है।
2. हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास का अध्ययन कर विद्यार्थी इस क्षेत्र में अपना करिअर बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अलंकार पारिजात : नरोत्तमदास स्वामी, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
2. हिन्दी व्याकरण : कामता प्रसाद गुरू।
3. हिन्दी भाषा की संरचना : डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद।

स्नातक तृतीय वर्ष – कला
षष्ठ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
हिन्दी साहित्य–तृतीय प्रश्न–पत्र
हिन्दी लेखन कौशल

03 क्रेडिट 45 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	9 प्रश्न (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न)	9×1= 9 अंक
2.	6 लघूत्तरात्मक प्रश्न	6x3 = 18 अंक
3.	3 प्रश्न निबंधात्मक (प्रत्येक खण्ड से एक)	3×9 =27 अंक
		54 अंक

सेमेस्टर परीक्षा की समय अवधि – 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन – 21 अंक
अधिकतम अंक – 75 अंक
न्यूनतम अंक – 30 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. विद्यार्थियों के शब्दकोश को सक्रिय रूप देना।
2. मातृभाषा के शब्दों का वास्तविक स्वरूप चित्रित कर सकने की क्षमता का विकास करना।
3. विद्यार्थियों को अपने विचारों तथा अनुभवों को अनुच्छेदों में बाँटकर लिखने का अभ्यास करवाना।

खण्ड क– लेखन कौशल

– लेखन का अर्थ
– लेखन कौशल की आवश्यकता एवं महत्व
– लेखन कौशल के उद्देश्य
– लेखन कौशल के प्रकार :
- अनुलेख (श्रव्य (ऑडियो) सामग्री का लेखन आदि)
- श्रुतलेख

– लेखन कौशल योग्यता का विकास :
- रचनात्मक आयाम :

– लेख, रिपोर्ट लेखन
– निबंध लेखन
– कहानी लेखन
– फीचर लेखन
– दैनंदिन पत्र

20 घण्टे / कक्षा

खण्ड ख– व्याकरण :

– शब्द विचार
- समश्रुत शब्द
- समानार्थी शब्द
- विलोम शब्द
- वर्तनी अशुद्धि संशोधन

15 घण्टे / कक्षा

खण्ड ग– शब्द–स्थानीय शब्दावली के प्रयोग एवं सीमाएं
- मानक शब्दावली
- अन्य भाषाओं के शब्दों की स्वीकार्यता एवं सीमाएं

वाक्य रचना
स्थानीय अभिव्यक्तियां – कहावतें / लाकोक्तियाँ आदि।

10 घण्टे / कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. विद्यार्थियों में नये ज्ञान का निर्माण करना।
2. विद्यार्थियों में भावनाओं और संवेगों का विकास करना।
3. विद्यार्थियों में शारीरिक और शारीरिक कौशल को बढाना।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. पारिभाषिक व्यावसायिक सम्प्रेषण – प्रो डॉ. पी. के. जैन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
2. व्यावसायिक सगठन एव सम्प्रेषण, डॉ. एस. सी. सक्सेना, प्रो. वी.पी. अग्रवाल, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
3. व्यावसायिक सगठन एव सम्प्रेषण, डॉ. एस. सी. जैन, कैलास पुस्तक सदन, भोपाल
4. सम्प्रेषण कौशल – डॉ प्रवीण कुमार अग्रवाल, साहित्य भवन, पब्लिकेशन, आगरा
5. व्यावसायिक हिन्दी – डॉ. प्रेमचन्द पातजलि, वाणी प्रकाशन
6. व्यावसायिक सम्प्रेषण – डॉ हसराज पाल, डॉ. मंजुलता शर्मा हिन्दी माध्यम कार्यान्वय, निदेशालय दिल्ली वि. वि.
7. फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प, डॉ. मनोहर प्रभाकर, अरविन्द चतुर्वेदी भोपाल